# Pakshiraj Powerful Shabar Kavach and Mantra



# पक्षिराज शाबर कवच एवं दुर्लभ शाबर मंत्र

## GURUDEV RAJ VERMA

**Contact-** +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

**Email-** mahakalshakti@gmail.com


**For more info visit---**

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com


Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

प्रस्तुत शाबर कवच आकाशभैरव का एक ऐसा दिव्य सुरक्षा कवच है जिसका भेदन संसार की कोई शक्ति नहीं कर सकती, परन्तु यह दुर्लभ कवच संसार की समस्त महाशक्तियों का भेदन कर अपने साधक को सुरक्षा प्रदान करता है। विधिपूर्वक इस शाबर कवच का पाठ करने से समस्त प्रकार की दैवीयबाधा, ग्रहबाधा, भूतप्रेतबाधा, शत्रुबाधा एवं महासंकट का अतिशीघ्र शमन होता है। स्वयं देवता भी इनके विशिष्ट साधक के तेज का सामना नहीं कर सकते, तो फिर साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या। विशेष प्रभाव के लिये इस मंत्र को विधिवत् पर्याप्त संख्या में सिद्ध किया जाता है। इस उग्र कवच का प्रयोग साधारण मनुष्य कदापि न करे। केवल विशिष्ट साधक ही गुरु आज्ञा उपरान्त् इस प्रकार के उग्र प्रयोगों के अधिकारी हो सकते हैं।

**कवच–** ॐ नमो आदेश गुरु को। आदिमायेचे स्वरूप तेजोमयाय अग्नि दंष्ट्रा करालाय श्रीशरभ शालुवाय पक्षिराजाय नवनाथाय ओंकाराय कृपाकराय थर–थर कांपे हुं हुं हुंकारे अगन पसारे

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

पवन चले, जल चले, चल-चल कर पिण्ड कु रक्षण करावे, त्रिवार मंत्र जपावे मनः कामना पूर्ण करावे।



ॐ नमो भगवते श्रीशरभ शालुवाय पक्षिराजाय नवनाथाय कोया कोन-कोन कु मारे, नव नरसिंह कु मारे, नव हनुमान कु मारे, छप्पन भैरव कु मारे, अठ्ठासी सहस्रकोटि चामुण्डा कु मारे, तैंतीस कोटि देवता कु मारे, देवकान्ता कु मारे, नवकोटि कात्यायनी कु मारे, चन्द्र कु मारे, सूरज कु मारे, क्षेत्रपाल कु मारे, परशुराम कु मारे, पांच पाण्डव कु मारे, अष्टकुली नाग कु मारे, तैजपाल कु मारे, अजयपाल कु मारे, अजान्तपाल कु मारे, काल कु मारे, महाकाल कु मारे, कालचक्र कु मारे, छत्तीस वेताल कु मारे, एक वीस म्हैसासुर कु मारे, आठरासे जोगिनी कु मारे, वारा-सटव्या कु मारे, सात असरा कु मारे, एक लाख अस्सी हजार वीर पैगम्बर कु मारे, नवलाख तारा कु मारे, नवग्रह कु मारे। कटकान ताडय-ताडय, मारय-मारय, शोषय-शोषय, ज्वालय-ज्वालय, हारय-हारय, सकल देवतान नाशय-नाशय, अति शोषय-शोषय, मम सर्वत्र रक्षय-रक्षय। ॐ खें खां खं फट् प्राण-ग्रहसि प्राण-ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

ॐ नमो भगवते श्री शरभ शालुवाय पक्षिराजाय नव नाथाय स्वर्गलोक कु बांधु, मृत्युलोक कु बांधु, नवलाख कुण्ड कु बांधु, नवलाख द्वार कु बांधु, नवलाख खैर कु बांधु, चार चक्र कु बांधु, चवदा भुवन कु बांधु, साठ संवत्सर कु बांधु, दोनो अयन कु बांधु, छह ऋतु कु बांधु, बारा मास कु बांधु, दोनो पक्ष कु बांधु, पन्द्रह तिथि कु बांधु, अठ्ठाविश नक्षत्र कु बांधु, सत्रविश योग कु बांधु, ग्यारह करण कु बांधु, सात वार कु बांधु, दिन कु बांधु, रात कु बांधु, बारा राशि कु बांधु, बारा संक्रमण कु बांधु, बारा लग्न कु बांधु, बन्धय-बन्धय, छेदय-छेदय, ताडय-ताडय, मारय-मारय, शोषय-शोषय, ज्वालय-ज्वालय, हारय-हारय, नाशय-नाशय, मम सर्वत्र रक्षय-रक्षय। ॐ खें खां खं फट् प्राण-ग्रहसि प्राण-ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ शालुवाय पक्षिराजाय नवनाथाय पाशुपतास्त्र कु बांधु, नारायणास्त्र कु बांधु, ब्रह्मास्त्र कु बांधु, वडवानलास्त्र कु बांधु, वैष्णवास्त्र कु बांधु, शक्तिास्त्र कु बांधु, अघोरास्त्र कु बांधु, प्रजन्यास्त्र कु बांधु, वातास्त्र कु बांधु, पर्वतास्त्र कु बांधु, गरुडास्त्र कु बांधु, सर्पास्त्र कु बांधु, मारणास्त्र

कु बांधु, आग्नेयास्त्र कु बांधु, यमास्त्र कु बांधु, मोहनास्त्र कु बांधु, वशीकरणास्त्र कु बांधु, स्तम्भनास्त्र कु बांधु, जृम्भणास्त्र कु बांधु, आकर्षणास्त्र कु बांधु, उच्चाटनास्त्र कु बांधु, गदास्त्र कु बांधु, त्रिशूलास्त्र कु बांधु, पाशास्त्र कु बांधु, खेटकास्त्र कु बांधु, तोमरास्त्र कु बांधु, शरास्त्र कु बांधु, शापास्त्र कु बांधु, सकल यंत्रास्त्र कु बांधु, सकल तंत्रास्त्र कु बांधु, सकल मंत्रास्त्र कु बांधु, निवारय-निवारय, मृडाय-मृडाय, ज्वालय-ज्वालय, नाशय-नाशय, मम सर्वत्र रक्षय-रक्षय। ॐ खें खां खं फट् प्राण-ग्रहसि प्राण-ग्रहसि हुं फट् सर्वशत्रुसंहारणाय शरभशालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।



## परम गोपनीय एवं दुर्लभ शरभ शाबर मंत्र-

वैदिक, पौराणिक और तांत्रिक मंत्रों की भांति शाबर मंत्रों का भी एक अलग सम्प्रदाय है जिसका प्रचलन प्राचीन काल से चला आ रहा है। साधना क्षेत्र में शाबर मंत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। मुख्यतः शाबर मंत्रों के शब्दों का कोई सीधा सा अर्थ नहीं

होता फिर भी इन मंत्रों में असाधारण ऊर्जा विद्यमान रहती है जिसके प्रभाव से अत्यन्त शीघ्र कार्य सिद्ध होता है। इस विषय में तुलसीदासजी 'रामचरितमानस' में कहते हैं–



कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा। साबरमंत्र जाल जिन्ह सिरिजा।।

अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू।।

अर्थात् 'जिन शिवपार्वतीने कलियुग को देखकर, जगत् के हित के लिये, शाबर मंत्रसमूह की रचना की, जिन मन्त्रों के अक्षर बेमेल हैं, जिनका न कोई ठीक अर्थ होता है और न ही जप होता है, तथापि श्रीशिवजी के प्रताप से जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष है।'

भगवती काली, भैरवजी एवं हनुमानजी के शाबरमंत्र सर्वाधिक देखने को मिलते हैं जो प्रायः सुलभ हैं, परन्तु शरभ सालुव शाबर मंत्र अत्यन्त दुर्लभ एवं अप्रकटय कहे जा सकते हैं जिन्हें साधकजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। शरभ सालुव साधना अपने आप में महाउग्र एवं प्रचण्ड साधना है। जिसे सही

दिशा एवं विधि द्वारा समर्थ गुरु से ग्रहण करना साधक का प्रथम कर्त्तव्य है।



चिन्तामणि शरभ शाबर मंत्र– "ॐ नमो आदेश गुरु को। चेला सुने गुरु फरमाय। सिंह दहाड़े घर में, जंगल में ना जाय। घर को फोरे, घर को तोरे, घर में नर को खाय। जिसने पाला, उसी का जीजा, साले से घबराय। आधा हिरना, आधा घोड़ा गऊ का रूप बनाय। एकानन में दुई चुग्गा, सो पक्षी रूप हो जाय। चार टांग नीचे देखूं, चार तो गगन सुहाय। फूंक मार दे, जल भुंज जाय, काली दुर्गा खाय। जंघा पे बैठा यमराज महाबली, मार के हार बनाय। भों भों बैठे भैरु बाबा, नाग गले लिपटाय। एक झप्पटा मार के पक्षी, सिंह ले उड़ जाय। देख–देख जंगल के राजा, पक्षी से घबराय। ॐ खें खां खं हुं फट् प्राण ले लो, प्रण ले लो घर के लोग चिल्लायं। ॐ शरभ शालुवाय पक्षिराजाय नमः। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। दुहाई महारुद्र की, देख चेला पक्षी का तमासा स्वाहा।"

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

वरप्रद शरभ दर्शन हेतु शाबर मंत्र- "ॐ नमो आदेश गुरु को। गुरु कहे, चेला सुने। एक अजुबो हुई गयो, सिंहा को पक्षी लई गयो। चेला कहे पक्षी दिखाओ, गुरु कहे ये मंत्र गाओ- ॐ शरभाय नमः। ॐ शुलवाय नमः। ॐ पक्षिराजाय नमः ह्रूं फट् स्वाहा। पक्षी-पक्षी परगट हो, परगट हो पक्षी, नहीं तो ई ग्यारह रुद्र की दुहाई। परगट हो पक्षी नहीं तो सती का सत जाय। परगट हो पक्षी, नहीं तो मिटे सब गुरु की आन और नौ नाथ की शान। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।" इस मंत्र में भगवान् शरभराज को प्रकट होने के लिये प्रार्थना कर दुहाई दी गयी है। साधक इस कामना हेतु नहीं अपितु केवल उनकी कृपा प्राप्ति हेतु ही संकल्पित होकर साधनारम्भ करे। विघ्न व्याधियों का शमन स्वतः हो जायेगा। शरभ सालुव जैसे महाक्रोधी देवता को मंत्रों के माध्यम से प्रकट करने के लिये आग्रह करने से साधक का स्वयं का अहित हो सकता है।

विधि- उक्त शाबर मंत्रों को प्राचीन शिवमन्दिर, श्मशान अथवा निर्जनस्थान जो पवित्र एवं साधनानुकूल हो, में सिद्ध किया जा सकता है। ग्रहणकाल, महापर्व या अन्य शुभकाल में गुरु, गणेश

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

एवं जगतगुरु शिवजी का ध्यानादि कर साधनारम्भ करें। जितेन्द्रिय होकर रक्षा कवच धारण करते हुए नित्य पांच, सात या ग्यारह माला रुद्राक्ष माला से रात्रिकाल में 21 दिन तक सम्पन्न करें। इसके अतिरिक्त निश्चित संख्या में संकल्प लेकर भी जप कर सकते हैं। शान्ति हेतु शिवलिंग को दुग्धादि से नित्य स्नान करायें। जप पूर्ण होने के पश्चात् सामर्थ्यानुसार कुमारी अथवा ब्राह्मण को भोजन करायें। विकट स्थिति हो तो अन्त में जपनीय मंत्र अथवा बीजमंत्र से शक्ति अनुसार हवन करें या करवायें। अन्य भी कई गुप्त विधान एवं प्रयोग हैं जो विस्तार भय से प्रकट नहीं कर रहा हूं।

मंत्र सिद्धि के समय साधक को कई प्रकार के भयानक दृश्य दिखाई देते हैं। जैसे- सांप, सिंह विकराल पक्षी आदि। जिससे साधक के धैर्य एवं साहस की परीक्षा होती है। जब साधक अटूट श्रद्धा एवं साहस के बल पर इस साधना को पूरा कर लेता है तो उसके समस्त प्रभावी शत्रु धराशायी हो जाते हैं, हिंसक जीव उस स्थान से पलायन कर जाते हैं तथा अत्यन्त प्रभावी तंत्रबंधन समाप्त हो जाता है। जिस पवित्र स्थान पर इस मंत्र का जप होता है वह पूरा क्षेत्र शरभसालुव के आधीन रहता है।

वहां किसी प्रकार की अनिष्ट शक्ति अथवा शत्रु प्रवेश नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त साधक को साधना क्षेत्र में अद्भुत सफलता प्राप्त होती है तथा साधक का शरीर दैवीय ऊर्जा से प्रतिष्ठित हो जाता है। इसके अतिरिक्त किसी भी साधक को उसकी योग्यता के अनुसार कई प्रकार के लाभ एवं अनुभूतियां होती हैं।



---

## Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com